



राजा की पसंद

एक भारतीय लोककथा

लेखक : शिव कुमार

हर राजा, चाहे वह मनुष्यों का राजा हो या जानवरों का, अपने आसपास कुछ वफ़ादार दरबारी रखना पसंद करता है। इसी कारण एक लोमड़ी, एक गिद्ध और एक तेंदुये को एक शेर अपना दरबारी बना लेता है।

शेर, उन तीनों को सुरक्षा प्रदान करता है और बदले में वह तीनों हर पल उसकी सेवा करते हैं, उसके लिये शिकार ढूँढ़ते हैं, उसके संदेश वन में यहाँ-वहाँ ले जाते हैं।

एक दिन तीनों दरबारी शेर को रेगिस्तान चल कर ऊँट का शिकार करने को राज़ी कर लेते हैं, ताकि वह ऊँट का स्वादिष्ट मांस खा सकें। परन्तु रेगिस्तान में वह सब एक भारी संकट में फँस जाते हैं। सीधा-साधा ऊँट ही शेर की जान बचा पाता है।

लेकिन ऊँट का मांस खाने के लिए तीनों दरबारियों का मन ललचा रहा है। वह ऊँट को अपनी चाल में फंसा लेते हैं और ऊँट स्वयं ही शेर से कहता है कि वह उसे मार कर खा जाए।

परन्तु शेर एक अच्छा राजा है और अंत में अच्छाई की जीत होती है और चालबाजों की हार।

भारत की इस सुंदर लोककथा का सार हर बच्चा सरलता से समझ सकता है।





राजा की पसंद

एक भारतीय लोककथा



राजा की पसंद

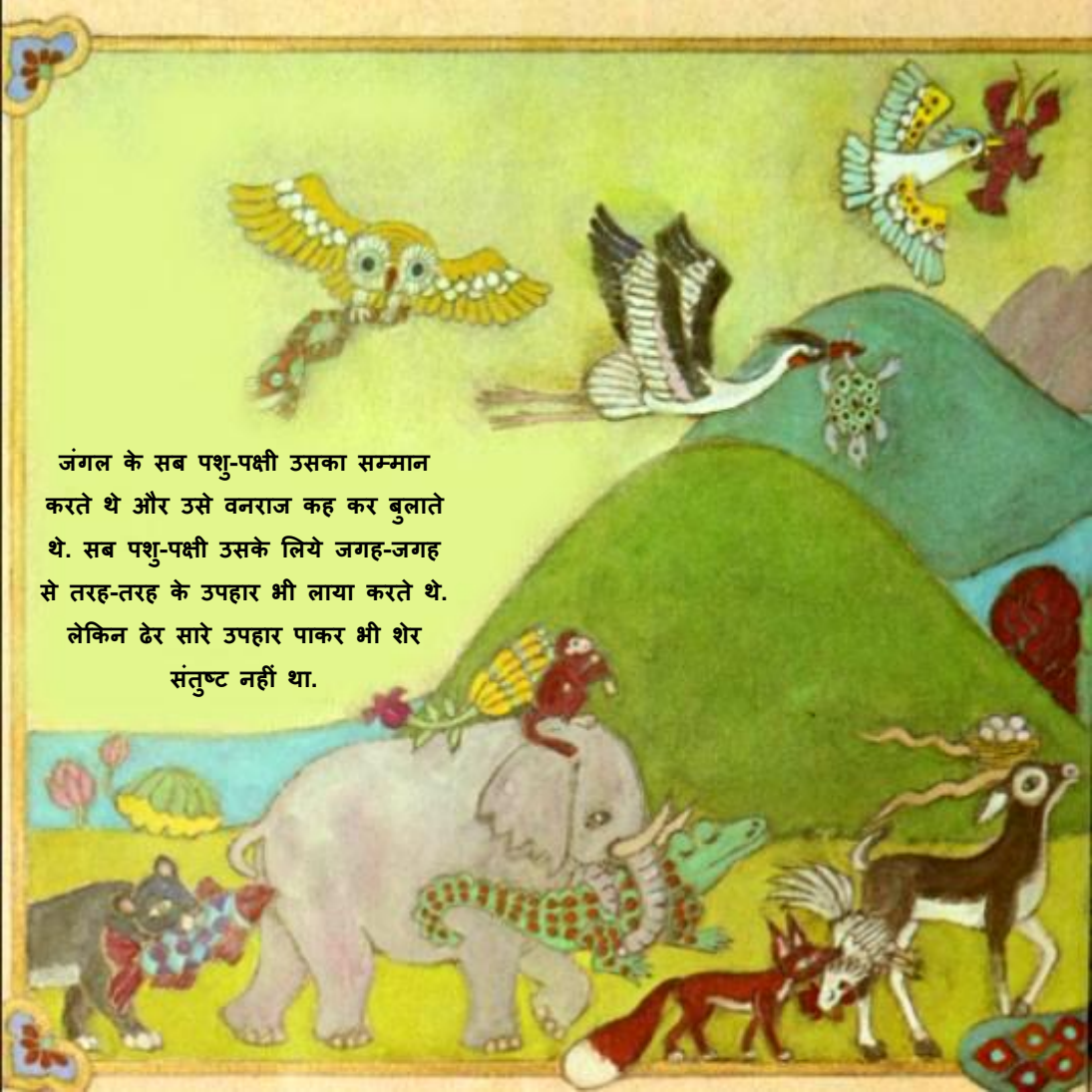
एक भारतीय लोककथा

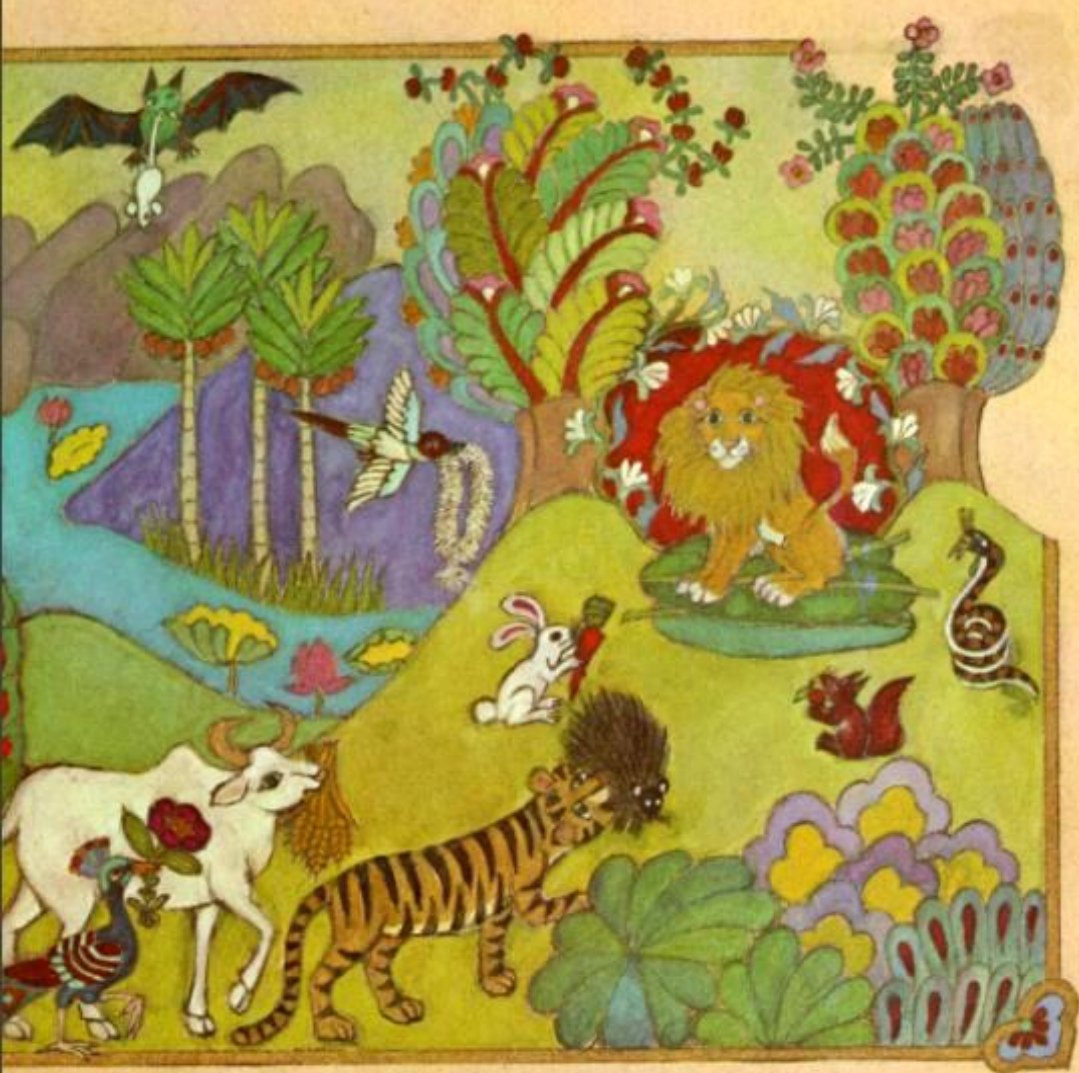
लेखक : शिव कुमार

एक समय की बात है,
एक शेर घने जंगल का
राजा था. वह बहुत बड़ा
था और बहुत ताकतवर
भी. वह बहुत खूँखार था
और बहुत आकर्षक भी.



जंगल के सब पशु-पक्षी उसका सम्मान
करते थे और उसे वनराज कह कर बुलाते
थे. सब पशु-पक्षी उसके लिये जगह-जगह
से तरह-तरह के उपहार भी लाया करते थे.
लेकिन ढेर सारे उपहार पाकर भी शेर
संतुष्ट नहीं था.







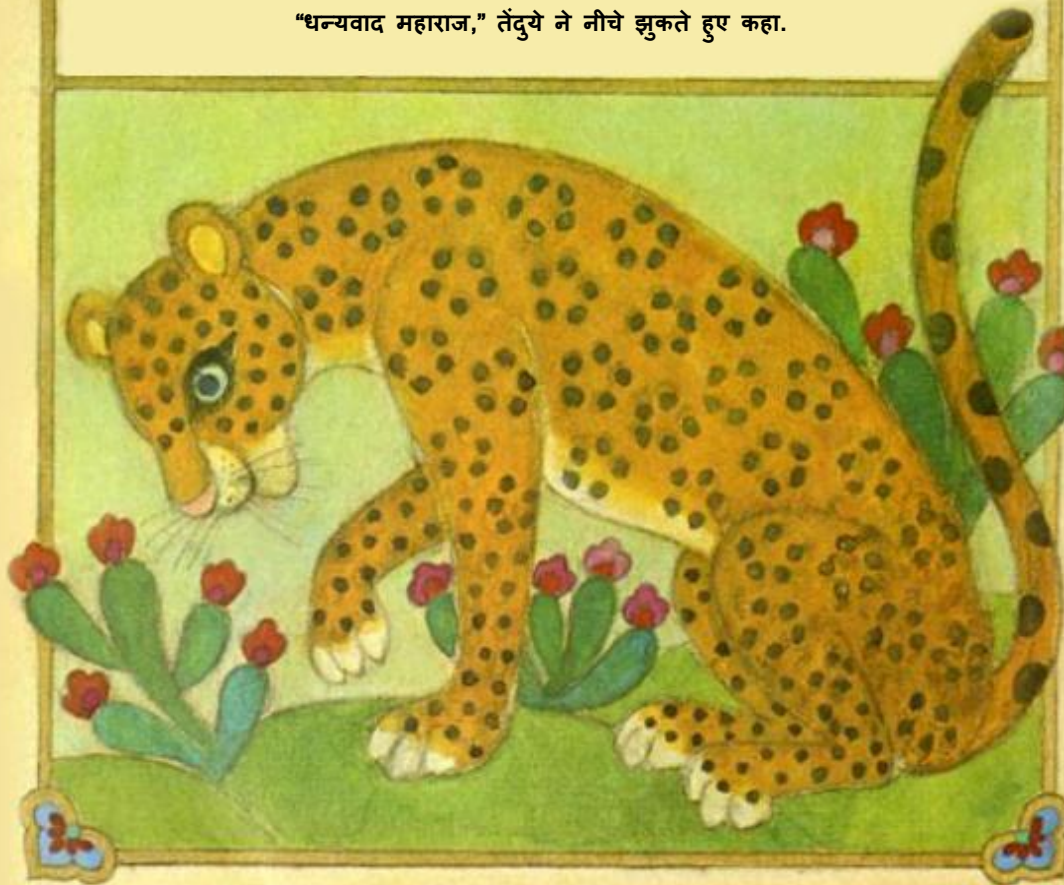
“राजा का अपना दरबार
होना चाहिए,” उसने एक
दिन अपने-आप से कहा.

उसने लोमड़ी को बुलाया और कहा, "इस वन में तुम सबसे चालाक और बुद्धिमान समझी जाती हो. मैं चाहता हूँ कि तुम मेरी मंत्री बन जाओ." "धन्यवाद महाराज," लोमड़ी ने कहा और सिर झुकाकर उसका अभिवादन किया.



फिर उसने एक तेंदुये को बुलाया और उससे कहा, "इस वन में तुम सबसे सतर्क पशु हो और सबसे तेज़ दौड़ते हो. मेरी इच्छा है कि तुम मेरे अंगरक्षक बन जाओ."

"धन्यवाद महाराज," तेंदुये ने नीचे झुकते हुए कहा.





अब शेर ने एक गिद्ध को बुलाया.

“तुम एक पक्षी हो और आकाश में बहुत ऊँचा उड़ सकते हो,”

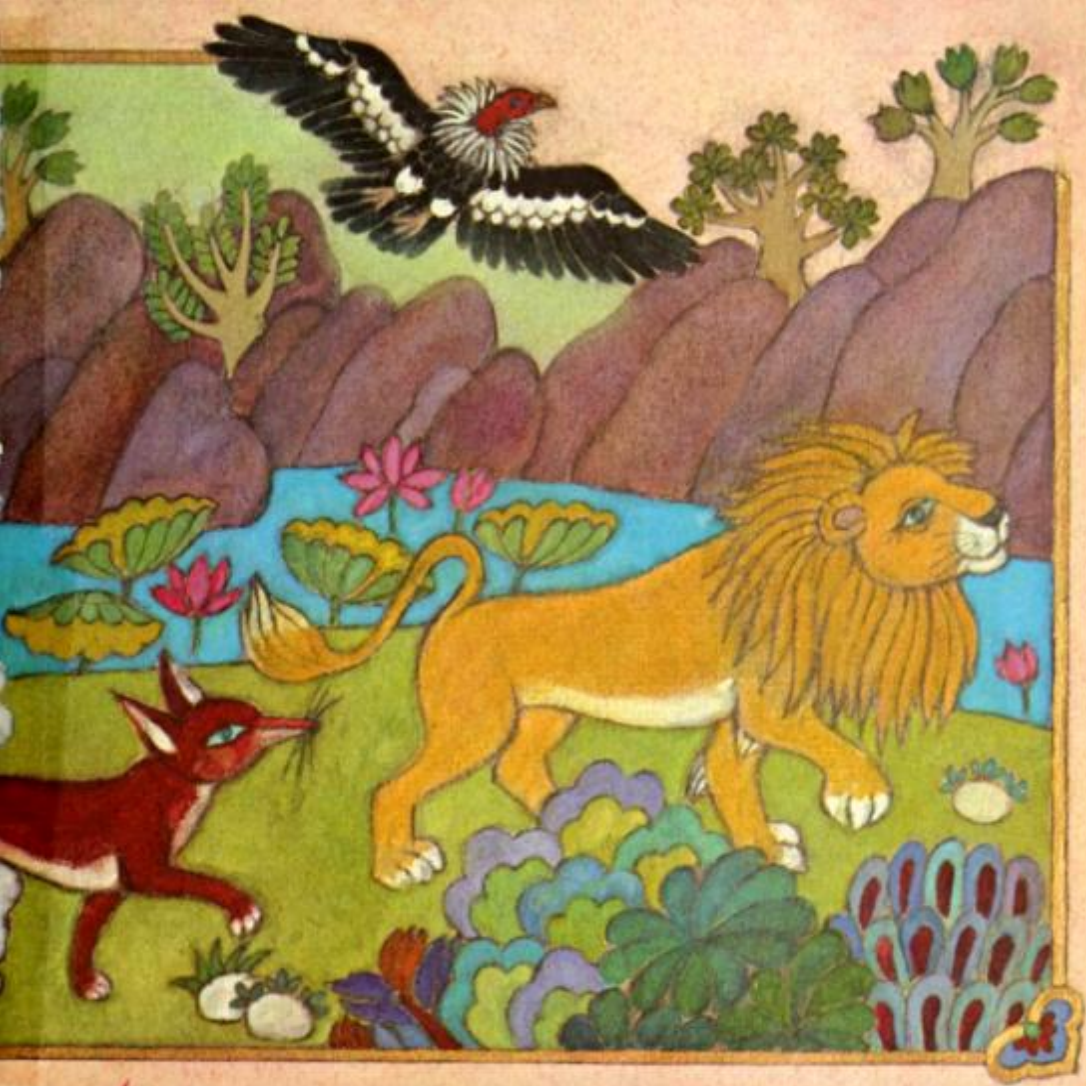
शेर ने कहा, “तुम मेरे संदेशवाहक बन जाओ.”

“धन्यवाद महाराज,” गिद्ध ने कहा और झुककर वनराज को प्रणाम किया.

लोमड़ी, गिद्ध और तेंदुये ने वचन दिया कि वह सदा वनराज के प्रति वफ़ादार रहेंगे और पूरी ईमानदारी के साथ उसकी सेवा करेंगे। शेर ने भी उन्हें आश्वासन दिया कि वह सदा उन तीनों का मित्र बना रहेगा और हर समय उनकी रक्षा करेगा। अपने शिकार का कुछ भाग उन्हें खाने के लिए देगा। कुछ समय तक वनराज का यह दरबार अच्छे ढंग से काम करता रहा। तीनों दरबारियों ने कभी भी राजा का विरोध नहीं किया। शेर जो भी कहता वह उसके आदेश को मानते और झटपट उसका पालन करते।

शेर जब भी दहाड़ता तो तीनों दौड़े हुए उसके पास आते। जब भी शेर टहलने निकलता तो तीनों दबू से उसके पीछे-पीछे चलते। जब भी शेर शिकार करने निकलता तो तीनों कोई-न-कोई पशु ढूँढ़ निकालते जिसे मारकर शेर अपना पेट भरता। अपना पेट भरने के बाद बचा-खुचा मांस वह तीनों के लिए छोड़ देता। इस तरह वे तीनों भी भर पेट भोजन कर लेते।







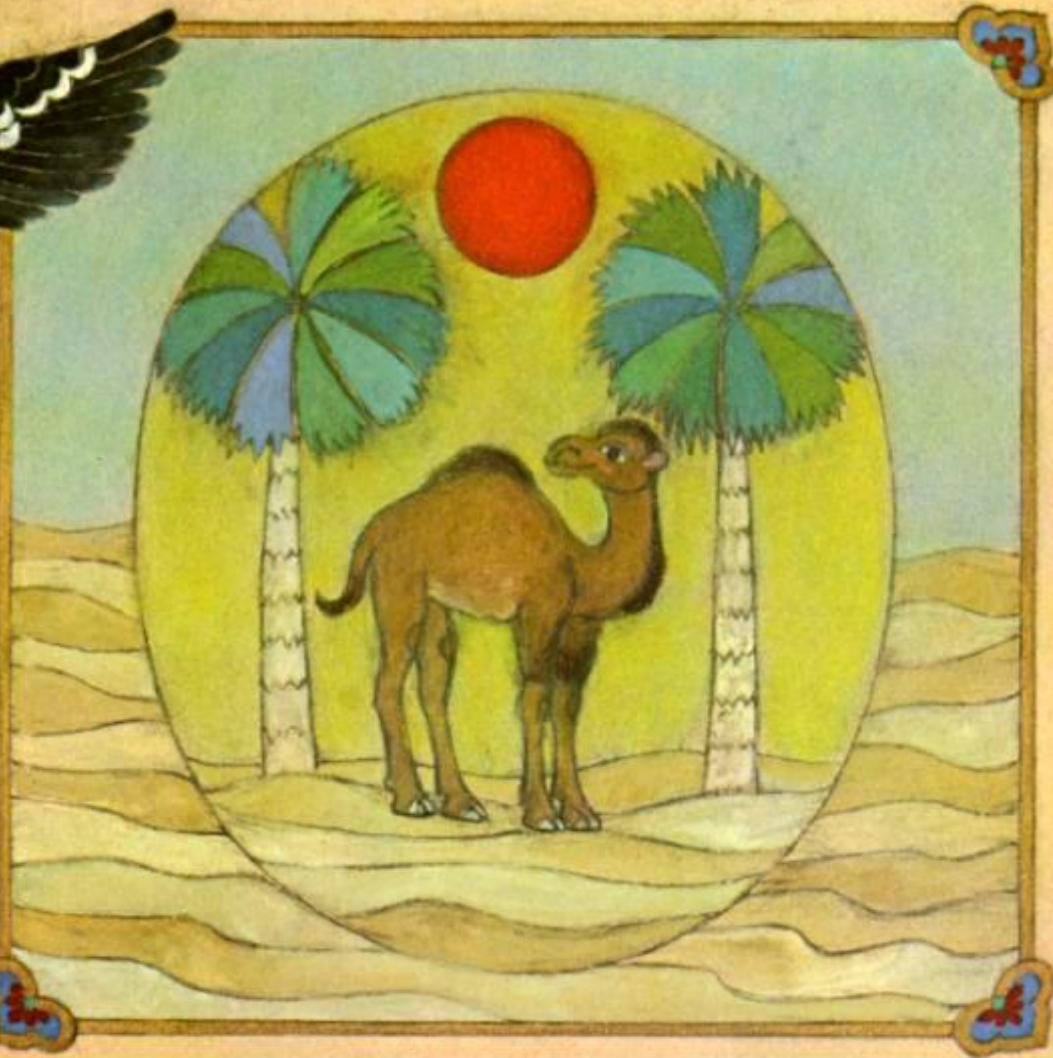
एक दिन आकाश में लंबी उड़ान भरने के बाद गिद्ध जंगल वापस आया। उसने जंगल के राजा से कहा, “महाराज, क्या आपने कभी ऊँट का मांस खाया है? एक दिन मैंने रेगिस्तान में ऊँट का मांस खाया था। ऊँट का मांस बहुत स्वादिष्ट होता है।”

शेर ने ऊँट कभी देखा भी न था। लेकिन गिद्ध की बातें सुनकर, ऊँट का मांस खाने के लिये उसका मन ललचाने लगा।

“लेकिन हमें ऊँट कहाँ मिलेगा?” शेर ने पूछा।

“यहाँ से कुछ मील दूर एक रेगिस्तान है। मैं उसी रेगिस्तान के ऊपर अभी उड़ान भर कर आया हूँ। वहाँ मैंने एक अकेला ऊँट देखा है। वह खूब मोटा-ताज़ा है। आपको उसका शिकार करना चाहिए।”

शेर ने दूसरे दरबारियों की ओर देखा। अब न तो लोमड़ी ने और न ही तेंदुये ने ऊँट देखा था। परन्तु वह दोनों इस बात को स्वीकार नहीं करना चाहते थे। ऐसा करने से शेर को लगता कि गिद्ध उन दोनों से अधिक समझदार था। दोनों ने कहा कि यह उत्तम विचार था। गिद्ध उन्हें रास्ता दिखाता जायेगा और वह उसी दिशा में चलते-चलते रेगिस्तान पहुँच जायेंगे और ऊँट का शिकार कर लेंगे।



अगली सुबह शेर अपने दरबारियों के साथ ऊँट का शिकार करने चल पड़ा. जल्दी ही वह सब जंगल की सीमा तक पहुँच गए. आगे विशाल रेगिस्तान था. तीनों रेत पर चलते हुए आगे बढ़ने लगे.

जैसे ही वह सब रेगिस्तान के अंदर पहुँचे, धूप तेज़ होने लगी. सूरज आग बरसाने लगा था. गर्म रेत पर चलना अब कठिन हो रहा था.





गिद्ध आकाश में बहुत ऊपर ठंडी
हवा में उड़ रहा था.

“थोड़ा तेज़ चलो,” उसने वहीं से चिल्ला
कर कहा, “ऊँट ज़्यादा दूर नहीं है.”

लेकिन तपती रेत पर चलने से शेर के पंजे
जलने लगे थे. उसे बहुत तकलीफ हो रही थी.







जब पंजों में जलन बढ़ गई तो वह चिल्ला कर बोला, “रुको, मैं और आगे नहीं जा सकता. चलो, हमें अपने जंगल वापस लौट चलें. ऊँट का मांस खाने में मेरी कोई रुचि नहीं है.”

शेर की बात सुन लोमड़ी और तेंदुआ डर गए. जंगल बहुत पीछे रह गया था और वापस जाने का रास्ता उन्हें पता न था. तेंदुआ जान बचाकर वहां से भाग जाना चाहता था. गिद्ध, शेर के मरने की प्रतीक्षा कर रहा था. वह मरे हुए शेर का मांस खाना चाहता था. लेकिन धूर्त लोमड़ी कोई नई चाल सोचने में लगी थी. उसे एक तरकीब सुझाई दी.

“मैं सहायता के लिए शीघ्र किसी को ढूँढ़ कर लाती हूँ,” इतना कह कर लोमड़ी रेगिस्तान के अंदर चली गई.





वह रेगिस्तान में यहाँ-वहाँ भटकती रही. कुछ समय बाद एक जगह उसे ऊँट दिखाई दिया. रेगिस्तान के अंदर एक लोमड़ी को देखकर ऊँट भी बहुत हैरान था.

“मित्र ऊँट, जल्दी मेरे साथ चलो. हमारे राजा तुम से तुरंत मिलना चाहते हैं,” लोमड़ी ने ऊँट से कहा.

“तुम्हारे राजा? कौन हैं तुम्हारे राजा? मैं तो किसी राजा को नहीं जानता. मैं तो बस अपने मालिक को जानता हूँ. उसका ही सामान अपनी पीठ पर लादकर मैं रेगिस्तान के पार ले जाता हूँ.”

“शेर हमारे राजा हैं. उन्होंने तुम्हारे मालिक को मार डाला है. अब तुम्हारा कोई मालिक नहीं है. अब तुम पूरी तरह स्वतंत्र हो. वनराज ने तुम्हें अपना दरबारी बनाने का निश्चय किया है. तुम मेरे साथ अभी चलो.”





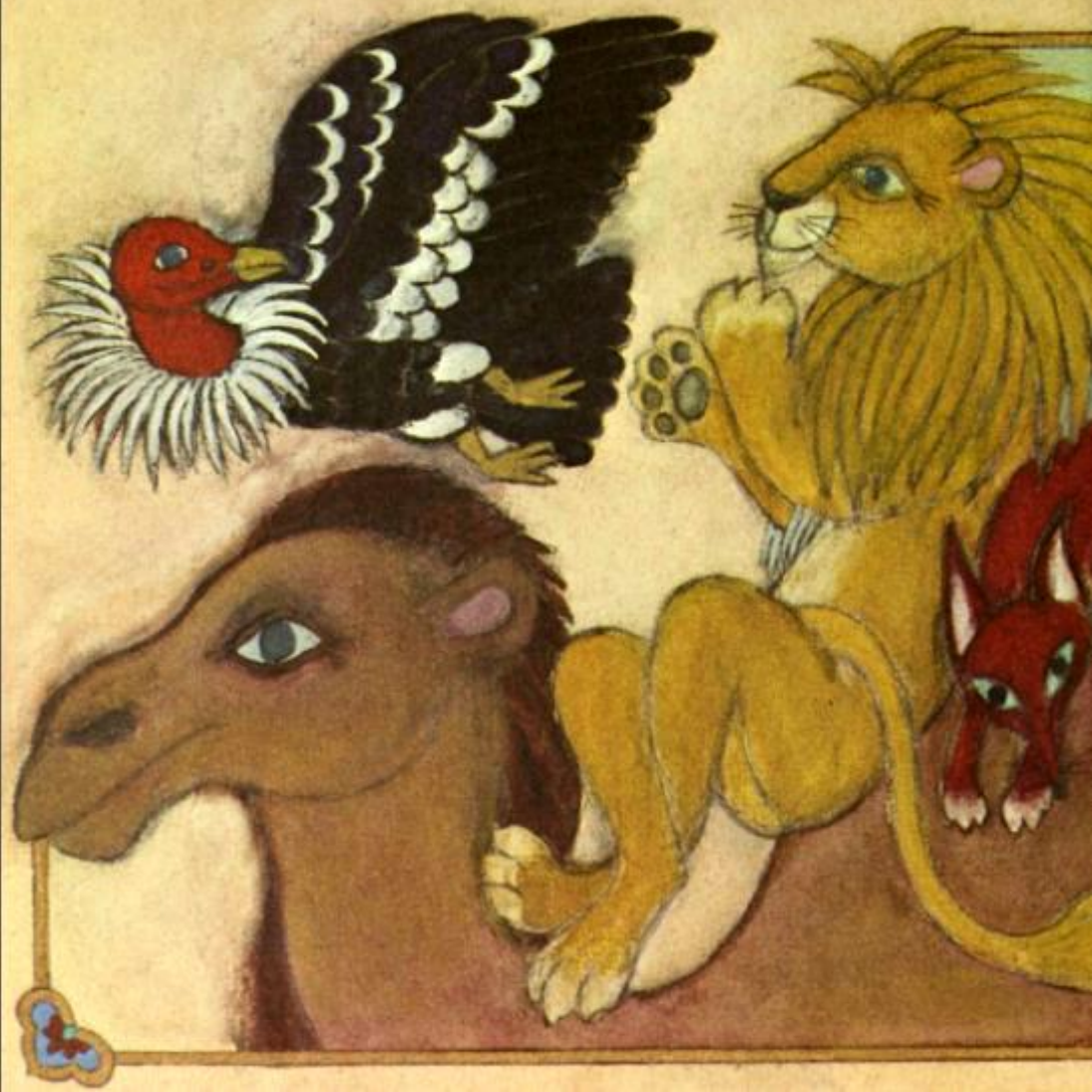
बेचारा ऊँट चालाक लोमड़ी की बातों में आ गया और उसके साथ चल दिया. जब वह शेर के शिविर में पहुँचे तो ऊँट को देख कर गिद्ध और तेंदुये को विश्वास न हुआ. पंजों के जलने बावजूद शेर भी बहुत प्रसन्न हुआ.

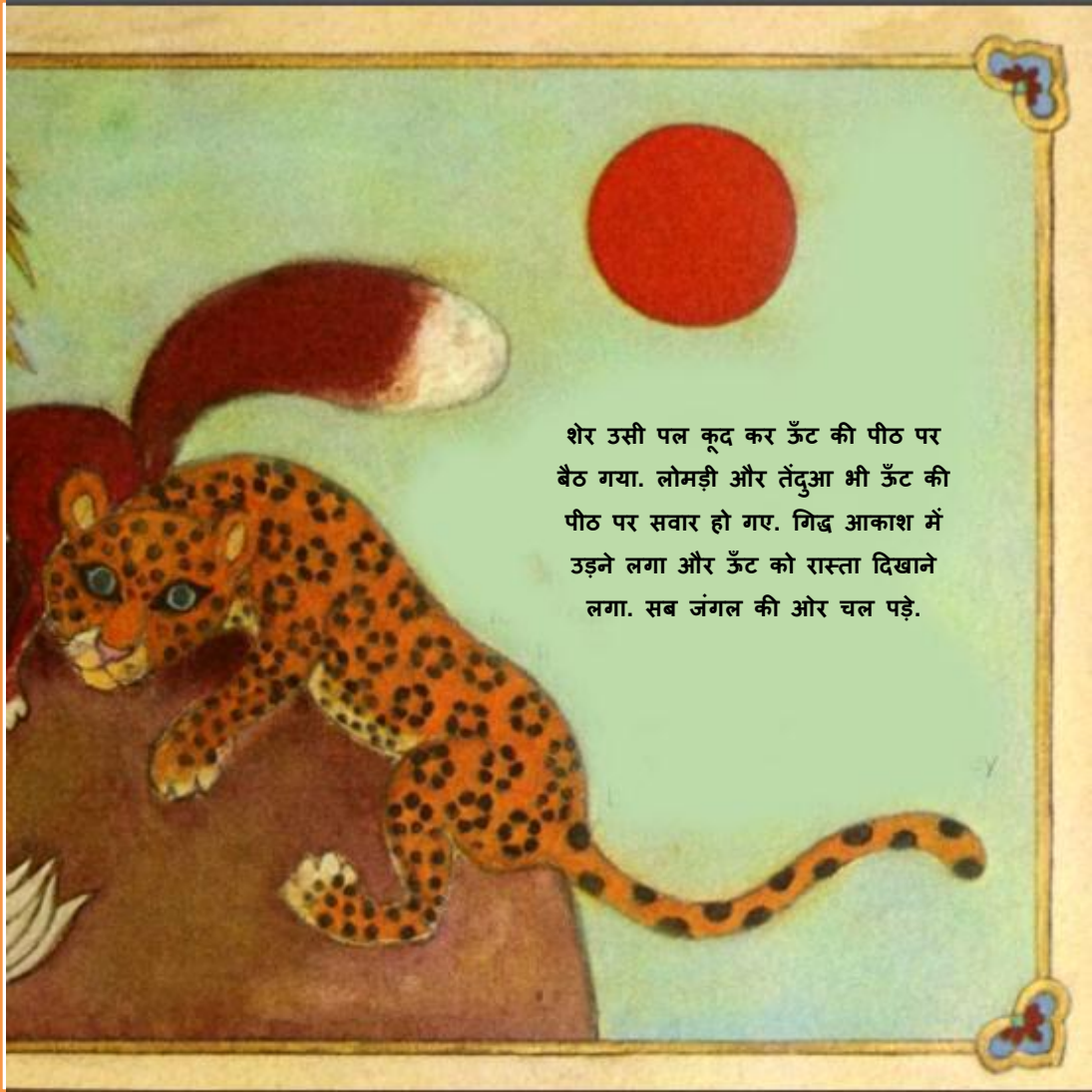
लोमड़ी ने अपने राजा से ऊँट का परिचय कराया. ऊँट ने राजा का दरबारी बनना स्वीकार कर लिया. उसने वचन दिया कि वह पूरी लग्न से राजा की सेवा करेगा.

“महाराज, आप इस ऊँट की पीठ पर बैठ जायें. अब हम अपने जंगल लौट चलेंगे,” लोमड़ी ने कहा.









शेर उसी पल कूद कर ऊँट की पीठ पर
बैठ गया. लोमड़ी और तेंदुआ भी ऊँट की
पीठ पर सवार हो गए. गिद्ध आकाश में
उड़ने लगा और ऊँट को रास्ता दिखाने
लगा. सब जंगल की ओर चल पड़े.



लंबी यात्रा के बाद सारे यात्री जंगल पहुंचे। वह दिन भर भटकते रहे थे। वह बहुत थक चुके थे। उन्हें बहुत भूख भी लगी थी। पूरे दिन उन्होंने कुछ नहीं खाया था।

लमड़ी, गिद्ध और तेंदुये ने ललचाई आँखों से ऊँट की ओर देखा। फिर उन्होंने एक-दूसरे की ओर देखा और मुस्कुरा दिए। मन-ही-मन वह प्रसन्न थे क्योंकि अब शेर आसानी से ऊँट का शिकार कर सकता था। आलीशान दावत उड़ाने का समय आ गया था।

लमड़ी, गिद्ध और तेंदुये को देखते ही शेर उनके मन की बात को ताड़ गया।





उसने ऊँट को अपने पास बुलाया और कहा, “मित्र, मेरा जीवन बचाने के लिये बहुत-बहुत धन्यवाद. इस वर्न में मैं तुम्हारा स्वागत करता हूँ. जब तक तुम

चाहो तब तक मेरे दरबारी बन कर यहाँ रह सकते हो. तुम्हें किसी से भी डरने की ज़रूरत नहीं. मैं सबसे तुम्हारी रक्षा करूँगा.”

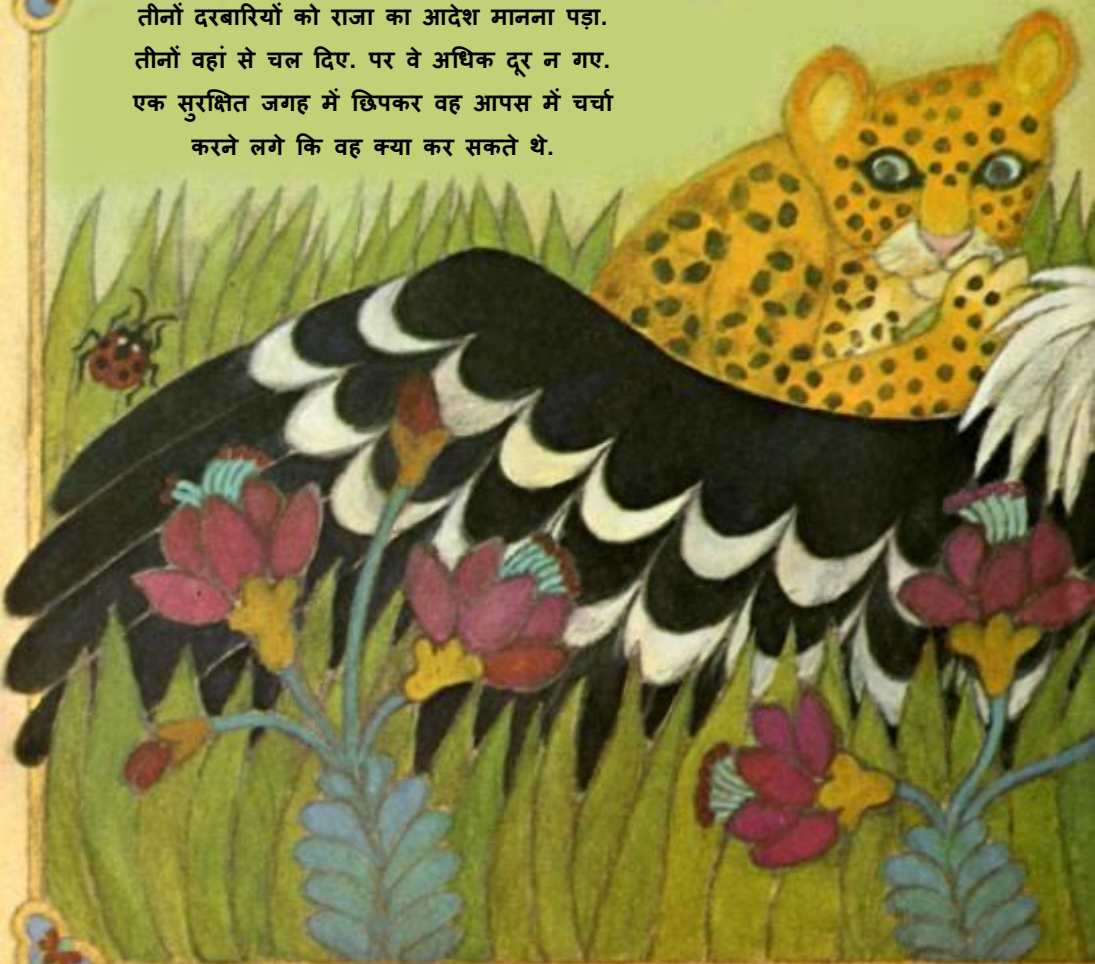
लोमड़ी, गिद्ध और तेंदुये को शेर की यह बात बिल्कुल अच्छी न लगी. ऊँट का स्वादिष्ट मांस खाने के लिये ही उन सब ने अपना जीवन दाँव पर लगाया था. परन्तु शेर उसे जीवित रखना चाहता था.

वह कुछ न कर सकते थे. राजा तो राजा ही होता है और उसका आदेश मानना ही पड़ता है. वह चुप हो कर बैठ गए. शेर के पंजे बुरी तरह जल गए थे. इस कारण शिकार करने का उसका मन न था.

परन्तु भूख तो उसे भी खूब लगी थी. उसने चिल्लाकर कहा, “लोमड़ी! गिद्ध! तेंदुये! क्या तुम्हें दिखाई नहीं पड़ता कि मेरे पंजे जल गये हैं और मुझे बहुत भूख भी लगी है? भाग कर जाओ और झटपट मेरे लिये कुछ खाना लेकर आओ.”



तीनों दरबारियों को राजा का आदेश मानना पड़ा.
तीनों वहां से चल दिए. पर वे अधिक दूर न गए.
एक सुरक्षित जगह में छिपकर वह आपस में चर्चा
करने लगे कि वह क्या कर सकते थे.



कुछ सोच कर लोमड़ी ने कहा, “मेरे दिमाग में एक बात आ रही है. हमें कुछ ऐसा करना होगा कि ऊँट स्वयं ही शेर से कहे कि अपनी भूख मिटाने के लिए वह उसे मार कर खा ले.”

लोमड़ी ने दोनों को अपनी योजना बताई. दोनों को लोमड़ी की चाल बहुत अच्छी लगी. तीनों चालबाज़ शेर के पास लौटकर आये.



सबसे पहले गिद्ध शेर के पास आया और बड़ी विनम्रता से बोला, “महाराज, बहुत खोजने पर भी हमें कहीं भी खाने को कुछ न मिला. लेकिन मैं अपने महाराज को भूख से तड़पता नहीं देख सकता. मैं एक छोटा-सा जीव हूँ. फिर भी आप मुझे खाकर अपनी भूख मिटा लें.”



उसके ऐसा कहने पर लोमड़ी ने गिद्ध को पीछे धकेल दिया और शेर से कहा, “महाराज, मेरे शरीर में इस गिद्ध से अधिक मांस है, आप मुझे खा लें.”

अब तेंदुआ आगे आया और बोला,
“महाराज, मैं कोई बहुत बड़ा जीव
नहीं हूँ, पर मेरे शरीर में इतना
मांस तो है कि एक राजा अपनी
भूख मिटा सके. आप मुझे खा लें.”



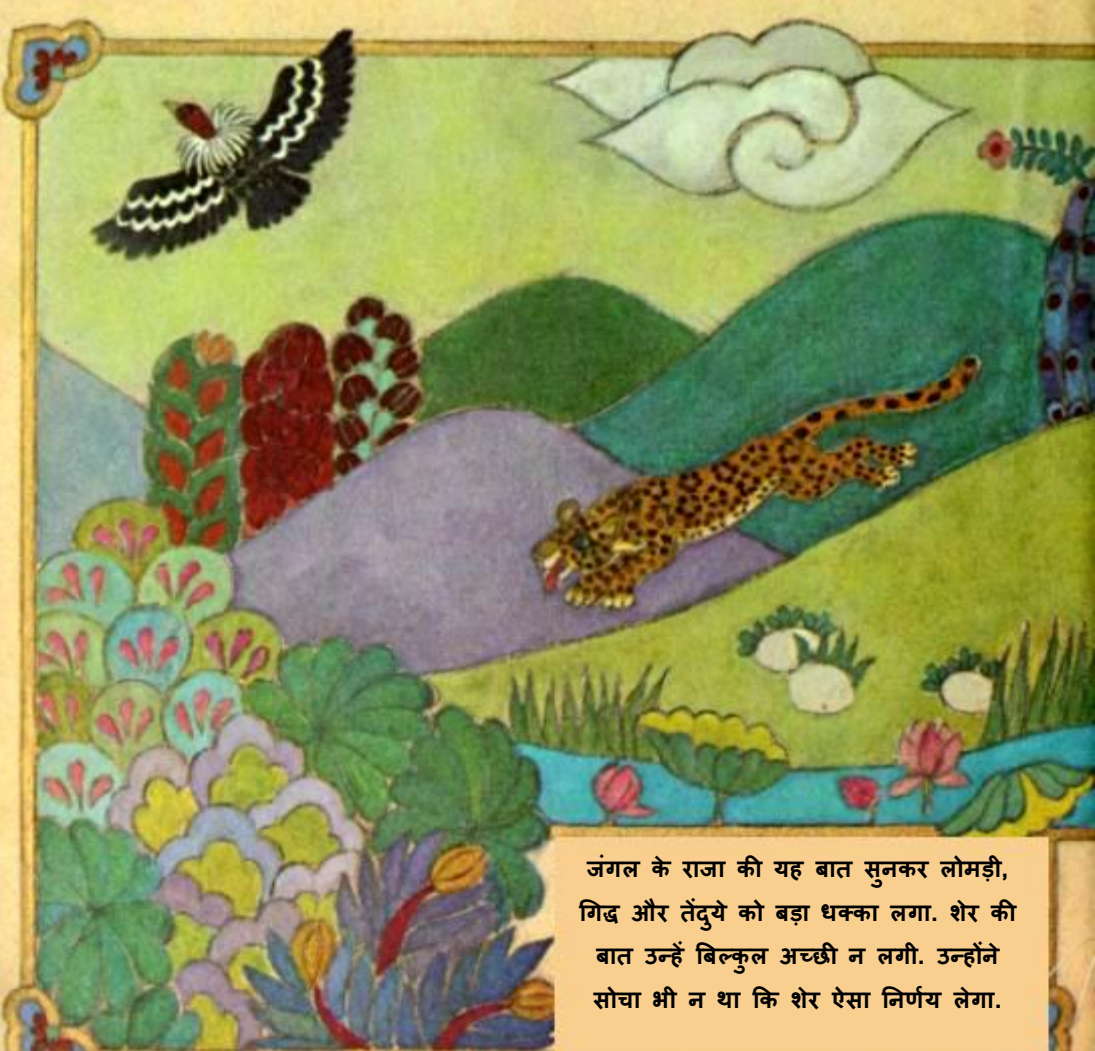
ऊँट उनकी बातें सुन रहा था. उन तीनों की
बातों से उसे लगा कि अपने राजा का कष्ट
दूर करने के लिये उसे भी कुछ करना
चाहिए. उसने शेर से कहा, “महाराज, राजा
का जीवन बचाने के लिये मैं अपना जीवन
बलिदान करना चाहता हूँ. यह तीनों तो
आपके बहुत पुराने मित्र हैं. वे मुझसे अधिक
योग्य हैं और आपकी अच्छी सेवा करते हैं.
इनकी बजाय आप मुझे मार कर खा लें.”



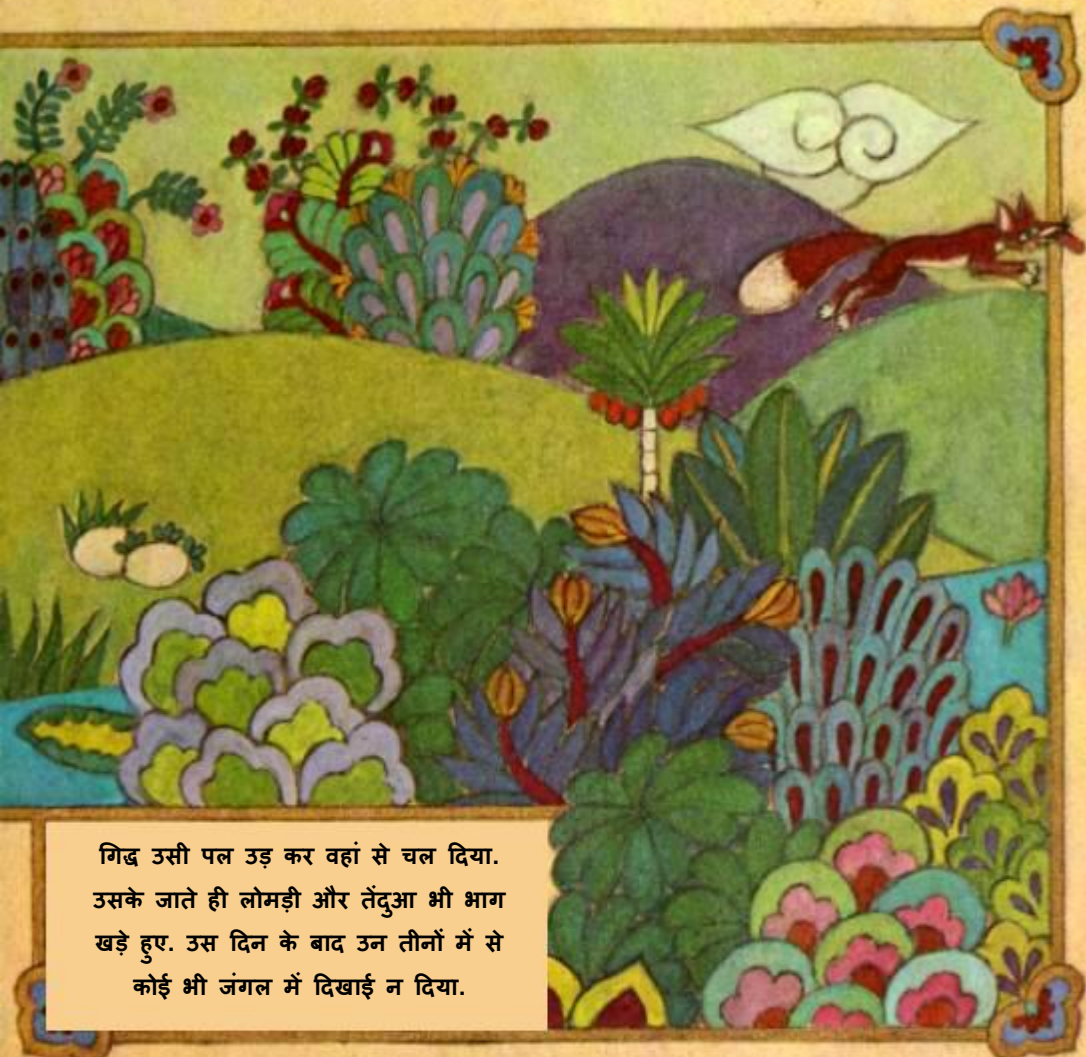
ऊँट की बात सुनते ही लोमड़ी, तेंदुआ और गिद्ध उस पर झपटने को तैयार हो गए. इस घड़ी का वह कब से इंतज़ार कर रहे थे. पर शेर ने संकेत देकर उन्हें रोक दिया.

“तुम सब मेरे बहुत ही अच्छे और वफादार दरबारी हो. तुम्हारी बातों ने मेरे मन को छू लिया है. मैं हरेक का प्रस्ताव स्वीकार करता हूँ. मैं किसी को निराश न करूँगा और सबको बारी-बारी मारकर खा जाऊँगा; सबसे पहले गिद्ध को, फिर लोमड़ी को, उसके बाद तेंदुये को और अंत में ऊँट को खाऊँगा.”



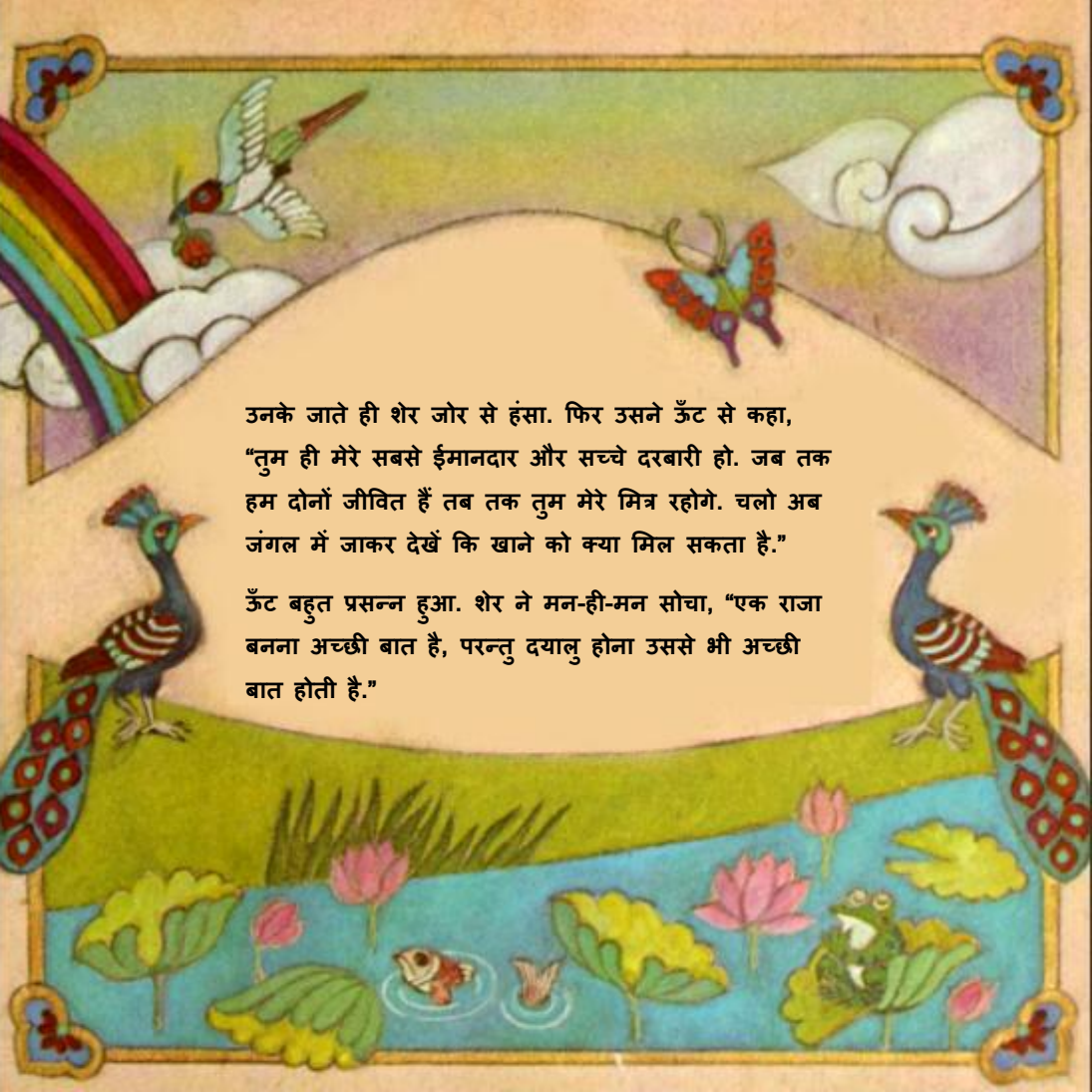


जंगल के राजा की यह बात सुनकर लोमड़ी,
गिद्ध और तेंदुये को बड़ा धक्का लगा. शेर की
बात उन्हें बिल्कुल अच्छी न लगी. उन्होंने
सोचा भी न था कि शेर ऐसा निर्णय लेगा.



गिद्ध उसी पल उड़ कर वहां से चल दिया.
उसके जाते ही लोमड़ी और तेंदुआ भी भाग
खड़े हुए. उस दिन के बाद उन तीनों में से
कोई भी जंगल में दिखाई न दिया.





उनके जाते ही शेर जोर से हंसा. फिर उसने ऊँट से कहा,
“तुम ही मेरे सबसे ईमानदार और सच्चे दरबारी हो. जब तक
हम दोनों जीवित हैं तब तक तुम मेरे मित्र रहोगे. चलो अब
जंगल में जाकर देखें कि खाने को क्या मिल सकता है.”

ऊँट बहुत प्रसन्न हुआ. शेर ने मन-ही-मन सोचा, “एक राजा
बनना अच्छी बात है, परन्तु दयालु होना उससे भी अच्छी
बात होती है.”



अंत

